भारतीय शिक्षा व्यवस्था की समस्याओं से लगभग सभी पढ़े-लिखे लोग परिचित हैं. इन्ही समस्याओं को दूर करने हेतु मैं कुछ सुझाव आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ. यह संभव है कि आप में से बहुत लोगों ने इनके बारे में सोचा होगा. मैं सिर्फ़ उन्हें एक व्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत कर रहा हूँ. 🏼🏼 \*vidyawarta research journal\*

1. सर्वप्रथम यह सुनिश्चित किया जाए कि, भारत की जनसंख्या के अनुपात में आवश्यकतानुसार प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च-माध्यमिक तथा विश्वविद्यालयों की उपलब्धता हो.

2. उपरोक्त सभी प्रकार के विद्यालयों में आवश्यकतानुसार शिक्षक-शिक्षिकाओं की व्यवस्था की जाए. साथ ही इन विद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन कार्य सुचारू रूप से चले, इस तथ्य को भी सुनिश्चित किया जाए.

3. बारहवीं कक्षा तक की शिक्षा के लिए एक समान शिक्षा-प्रणाली को संपूर्ण भारत में लागू किया जाए. जिसके अंतर्गत; निजी विद्यालयों को या तो पूर्णतया प्रतिबंधित कर दिया जाए या सिर्फ़ सेवार्थ उद्देश्यों वाली संस्थाओं को मान्यता प्रदान किया जाए.

4.  सभी प्रकार का शिक्षण और प्रशिक्षण प्रत्येक भारतीय नागरिक हेतु पूर्णतया मुफ़्त हो तथा पुस्तकें भी मुफ़्त में वितरित की जायें. साथ ही बारहवीं तक प्रवेश हेतु किसी भी प्रकार की योग्यता-परीक्षा को प्रतिबंधित किया जाए. ध्यान रहे कि इस सुझाव को लागू करने हेतु एक समान गुणवत्ता वाले विद्यालयों को जनसंख्या के अनुपात में उपलब्धता आवश्यक है.

5. कक्षा शिशु से लेकर 3 तक बच्चों में भाषायी तथा आंकिक क्षमता का विकास किया जाए. इस कार्य हेतु पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों के स्थानीय संस्कृति तथा वातावरण के अनुकूल निर्मित किया जाए. साथ ही नैतिक शिक्षा तथा शारीरिक शिक्षा (खेलकूद तथा व्यायाम) की शिक्षा शुरुआती कक्षाओं से ही शुरू किया जाए. ऐसे पाठ्यक्रम की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे बच्चें लिंग, जाति, धर्म, भाषा तथा क्षेत्र संबंधी पूर्वाग्रहों से बचे रहें. इसके लिए खुद शिक्षक-शिक्षिकाओं का इन पूर्वाग्रहों से दूर रहना आवश्यक है. साथ ही शिक्षा को धर्म से दूर रखना अत्यंत आवश्यक है.

6. कक्षा 4 से 5 तक विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा, शारीरिक शिक्षा; स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय संस्कृति; इतिहास, भूगोल, भाषा, गणित, कृषि तथा उद्योग-धंधों इत्यादि से सम्बंधित प्रारंभिक अथवा परिचयात्मक ग्यान प्रदान किया जाना चाहिए.  
  
7. कक्षा 6 से 8 तक विभिन्न व्यवसायों यथा; चिकित्सा (Medical), प्राविधिकी(Engineering), कृषि(Agriculture), शिक्षा(Education) तथा प्रबंधन(Management) इत्यादि से संबंधित पाठ्यक्रम का सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक ग्यान तथा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए. विभिन्न व्यवसायों की शिक्षा का कक्षावार विभाजन किया जाना चाहिए.

8. कक्षा 9 से 10 तक पूर्वोक्त (कक्षा 6 से 8 के) विषयों में से विद्यार्थियों की रूचि तथा योग्यता (संपूर्ण; सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक) के अनुसार किन्हीं 5 या 6 विषय को चुनकर शिक्षण तथा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए. साथ ही व्यावहारिक नैतिक शिक्षा तथा शारीरिक शिक्षा की भी अनिवार्य व्यवस्था की जानी चाहिए.

9. कक्षा 11 से 12 तक पूर्वोक्त (कक्षा 9 से 10 के) विषयों में से विद्यार्थियों की रूचि और सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक योग्यतानुसार किन्हीं 3 विषयों के शिक्षण तथा प्रशिक्षण के साथ ही व्यावहारिक नैतिक शिक्षा तथा शारीरिक शिक्षा की भी अनिवार्य व्यवस्था की जानी चाहिए.

10. स्नातक में पूर्वोक्त विषयों मे से विद्यार्थियों की रूचि और व्यावहारिक तथा सैद्धांतिक योग्यतानुसार किसी विषय का शिक्षण तथा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए. साथ ही व्यावहारिक नैतिक तथा शारीरिक शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए.

प्रस्तुत सुझावों पर आप सभी की प्रतिक्रियायें सादर आमंत्रित हैं.        ✒✒

                \*आंतरराष्ट्रीय संशोधन पत्रिका विद्यावार्ता\* (ISSN 2329 9318)        [www.vidyawarta.com](http://www.vidyawarta.com)

|  |
| --- |
|  |